रूहानी मीठे-2 बच्चे जानते है कि फिर से आना कल्प-2 के बाद, इसको कहा जाता है फिर से दूर देश का रहने वाला आया देश पराये। यह सिर्फ उस एक के लिये ही गायन है। उनको ही सभी याद करते है। वो है विचित्र उनका कोई चित्र नही है। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को देवता कहा जाता है। शिव भगवानोवाच्य। कहा जाता है। वो रहते है परमधाम मे। उनको सुखधाम मे कभी बुलाते नही है। वो आते ही संगम परयह तो बच्चे जानते ही है कि सतयुग मे सारे विश्व पर तुम पुरुषोत्तम रहते हो। मध्यम कनिष्ट कहा नही होते। उत्तम से उत्तम पुरुष यह लक्ष्मी-नारायण है। इनको ऐसा बनाने वाला श्री-2 शिव बाबा कहेंगे श्रीश्री उस शिव बाबा को ही कहा जाता है। आजकल तो सन्यासी आद भी अपने को श्री-2 कह देते है। तो बाप ही आकर उस सृष्टी को पुरुषोत्तम बनाते है। सतयुग मे सारी सृष्टी मे उत्तम से उत्तम मनुष्य रहते है। उत्तम से उत्तम तथा कनिष्ट से कनिष्ट का अर्थ इस समय तुम समझते हो। कनिष्ट मनुष्य आप ही निचाई दिखाते है। अब तुम समझ सकते हो कि हम क्या थे। अब क्या बन रहे है। हम पापात्मा पतित थे। अब फिर से हम स्वर्गवासी पुरुषोत्तम बन रहे है। यह है ही संगम युग। तुमको खातरी है कि इस पुरानी दुनियाँ का जरूर विनाश होना है। बाप दूर देश के रहने वाले पराये देश मे आये है नई दुनियाँ स्थापन करने। पुरानी सो नई,नई सो पुरानी जरूर बननी है। नई को सतयुग,पुरानी को कलियुग कहा जाता है। बाप है ही सच्चा सोना। सच ही कहने वाला। उनको ट्रुथ कहते है। सभी कुछ सत्य बताते है। यह जो कहते है कि ईश्वर सर्वव्यापी है वो सब झूठ है। अब बाप कहते है झूठ ना सुनो। सी नो ईवल... भक्ति करते-2 बन्दर मिसल बन गये है। बाप के लिये यह झूठ ही झूठ बताते है। राजविद्या की बात अलग है। वो तो है ही अल्पकाल के सुख लिये। दूसरा जन्म लेकर फिर नये सिर पढ़ना पड़े। वो है अल्पकाल का सुख। यह है 21जन्म 21पीढ़ी के लिये। पीढ़ी बुढ़ापे को कहा जाता है। वहाँ कब अकाले मृत्यु नही होती। यहाँ तो देखो कैसे अकाले मृत्यु होती रहती है। गर्भ मे भी मर जाते है। तुम अभी काल पर जीत पहन रहे हो। जानते हो वो है अमर लोक। यह है मृत्युलोक।वहाँ तो जब बूढ़े होते है तो साक्षात्कार होता है कि हम तो जाकर बच्चा बनेंगे। बुढ़ापा पूरा होगा और हम यह शरीर छोड़ेंगे। नया शरीरमिले वो तो अच्छा ही है ना। बैठे-2 खुशी से शरीर छोड़ देते है। यहाँ तो उस अवस्था मे रहते शरीर छोड़ने लिये मेहनत लगती है। यहाँ की मेहनत वहाँ पर फिर कायम हो जाती है। यहाँ देह सहित जो कुछ भी है सबको भूल जाना है अपने को सिर्फ आत्मा समझना है। इस पुरानी दुनियाँ को छोड़ना है। आत्मा सतोप्रधान थी तो सुन्दर शरीर मिला। फिर काम चिता पर बैठ कर तमोप्रधान सांवरे हो गये तो शरीर भी सांवरा मिला। सुन्दर से श्याम बन गये। कृष्ण का नाम तो कृष्ण ही है फिर भी उनको श्याम सुन्दर क्यो कहते है। चित्रों मे भी कृष्ण का चित्र सांवरा बना देते है। परन्तु अर्थ नही समझते है। अब तुम समझते हो कि सतोप्रधान थे तो सुन्दर थे। अब तमोप्रधान श्याम बने है।सतोप्रधान को पुरुषोत्तम कहा जाता है। तमोप्रधान को कनिष्ट कहेंगे। बाप तो एवर प्योअर ही है। वो आते है हसीन बनाने। मुसाफिर है ना। कल्प-2 आते है नही तो पुरानी दुनियाँ को नया कौन बनावे। यह तो पतित छी-2 दुनियाँ है। इन बातों को दुनियाँ मे कोई नही जानते। अभी तुम जानते हो कि बाप हमको पुरुषोत्तम बनाने के लिय पढ़ा रहे है। हम फिर से सो देवता बनने लिये हम सो ब्राह्मण बने है। हम शूद्र थे। अब फिर शूद्र= ब्राह्मण बने है। तुम हो संगम युगी ब्राह्मण। दुनियाँ यह नही जानती कि अब संगम युग है। शास्त्रों मे लाखो वर्ष कल्प की आयु लिख दी है। वो समझते है कि कलियुग तो अजुन बच्चा है। अब तुम दिल मे समझते हो कि हम यहाँ आये है उत्तम से उत्तम कलियुग पतित से सतयुगी पावन मनुष्य से देवता बनने लिये। ग्रंथ मे भी महिमा है मूत पलीती कपड़ धोये परन्तु ग्रंथ पढ़ने वाले भी अर्थ नही समझते है। खुद मूत पलीती है और बैठकर गुरु नानक का

इस समय तो बाप आकर सारी दुनियां के मनुष्य मात्र को साफ करते है। तुम उस बाप के सामने बैठे हो। बच्चों को समझाया है कि रचता और रचना की नालेज को कोई जानते ही नही है। बाप ही ज्ञान का सागर है। वो सत है चैतन्य है। अमर है। पुनर्जन्म रहित है। शान्ति का सागर पवित्रता का सागर सुख का सागर है। उनको ही बुलाते है कि आकर यह वर्सा दो। तुमको अभी बाप 21 जन्मों के लिये वर्सा दे रहे है। यह है अविनाशी पढ़ाई। पढ़ाने वाला भी अविनाशी बाप है। आधा कल्प तुम राज्य पाते हो फिर रावण राज्य होता है। आधा कल्प है राम राज्य आधा कल्प है रावण राज्य। तुम बच्चों को अवश्य निश्चय है कि तुम्हारा प्राणों से प्यारा वो पारलौकिक बाप है। प्राण आत्मा को कहा जाता है। मनुष्य मात्र उनको याद करते है। क्योंकि वो आकर दुःख से छुड़ा कर सुख मे ले जाते है। तो प्राणों से प्यारा हुआ ना। आधा कल्प के दुःखों से छुड़ाकर सुख शान्ति देने वाला बाप है। तुम जानते हो सतयुग मे हम सदासुखी रहेंगे। बाकी सब शान्ति धाम मे चले जावेंगे। फिर रावण राज्य मे दुःख शुरू होता है। दुःख और सुख का खेल है। ~~अभी दुःख~~ मनुष्य समझते है कि यहां ही अभी सुख है यहां ही अभी दुःख है परन्तु नही। तुम जानते हो स्वर्ग अलग है नर्क अलग है। स्वर्ग की स्थापना बाप राम करते है नर्क की स्थापना रावण करते है। जिसको ही बड़े-2 जलाते है परन्तु क्यों जलाते है वो कौन है यह कुछ भी नहीं जानते है। बड़े-2 महाराजायें, प्रेजिडन्ट प्राईमिनिस्टर आद सब जैसे कि बेवकूफ है। दशहरे पर क्या-2 बैठ बनाते है। कितना खर्चा करते है। समझते कुछ भी नही है। कितनी कहानियां बैठ सुनाते है। राम की सीता भगवती को रावण ले गया। मनुष्य भी समझते है हां ऐसा हुआ होगा। अभी तुम समझते हो कि कितने नानसेन्स है। किसको भी नही जानते। ना शिव बाबा को, ना ब्र, वि, शं की बायोग्राफी को जानते है। इसको ही कहा जाता है अन्धियारा। अभी तुम सबका आक्यूपेशन जानते हो। यह तुम्हारी बुधी मे नालेज है। सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी को कोई भी मनुष्य नही जानते है। बाप ही जानते है। उनको वर्ल्ड का रचता भी नही कहेंगे। वर्ल्ड तो है ही। बाप सिर्फ आकर नालेज देते है कि यह चक्र कैसे फिरता है। भारत मे इन ल-न का राज्य था फिर क्या हुआ। देवताओं से कोई ने लड़ाई की क्या? कुछ भी नही। आधा कल्प बाद वाम मार्ग शुरू होने से देवतायें वाम मार्ग मे चले जाते है। बाकी ऐसे नही कि युध मे कोई से हारे। लश्कर आद की कोई बात नही। ना लड़ाई से राज्य लेते है। ना गंवाते है। यह तो योग मे रह पवित्र बन पवित्र राज्य तुम स्थापन करते हो। बाकी हाथ मे कोई चीज नही। यह है डबल अहिंसक। एक तो पवित्रता की अहिंसा। दूसरों को तुम दुःख नही देते यह दूसरी। सबसे बड़ी हिंसा है काम विकार की। जो ही आद मध्य अन्त के दुःख देती है। रावण के राज्य मे ही दुःख शुरू होता है। बिमारियां शुरू हो जाती है। कितनी ढेर बिमारियां है अनेक प्रकार की दवाईयां निकलती है। रोगी बन गये है ना। तुम इस योग बल से 21 जन्मों लिये निरोग बनते हो। वहां दुःख वा बिमारी का नाम निशान नही रहता। इसलिये तुम पढ़ रहे हो। बच्चे जानते है कि भगवान हमको पढ़ा कर भगवान भगवती बना रहे है। पढ़ाई भी कितनी सहज है। आधे पौने घण्टे मे सारी नालेज समझा देते है। 84 जन्म भी कौन-2 लेते है यह भी तुम्ही जानते हो। तुम जानते हो भगवान हमको पढ़ाते है। वो है ही निराकार। सच्चा-2 नाम उनका शिव है। कल्याण कारी है ना। सर्व का कल्याण कारी सर्व का सदगति दाता है। ऊंच ते ऊंच बाप ऊंच ते ऊंच मनुष्य बनाते है। बाप पढ़ा कर होशियार बना कर अब कहते है जाकर पढ़ाओ। इन ब्रहम्म कु, कु, को पढ़ाने वाला शिव बाबा है। ब्रहमा द्वारा तुमको एडाप्ट किया है। प्रजापिता ब्रहमा कहां से आया? इस बात मे ही मूंझते है। इनको एडाप्ट किया? कहते है बहुत जन्मों के भी अन्त ... अब बहुत जन्म किसने लिये? इन ल-न ने ही पूरे 84 जन्म लिये है। इसलिय कृष्ण के लिये कह देते है श्याम सुन्दर। हम सो सुन्दर थे फिर दो कला कम हुई? कला कम होते -2 अब नो कला बन गये है।

अब तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बने बाप कहते है पतित पावन मै ही हूं मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। यह भी जानते हो यह रुद्र ज्ञान यज्ञ है। अब यज्ञ मे चाहिये ही ब्राहम्ण। तुम सच्चे ब्राहम्ण हो सच्ची गीता सुनाने वाले। इसलिये तुम लिखते भी हो सच्ची गीता पाठशाला। तुम सिध कर बताते हो कि और सब है झूठी गीता पाठशालाये। गीता मे नाम ही बदल दिया है। यह भी जानते है जिन्होंने भी कल्प पहले वर्सा लिया है वो ही आकर लेंगे। अपने ही दिल से पूछो हम पूरा वर्सा ले सकेंगे। यह तुम्हारी 21जन्मों के लिये कमाई है। वो नकली कमाई साथ तो नही चलनी है। मनुष्य मरते है तो हाथ खाली ही जाते है। तुम शरीर छोडेंगे तो हाथ भरतु। बाकी सबहाथ खाली जायेंगे। सारी कमाई कहीं मिट्टी मे ही मिल जावे इससे तो हम क्यो ना सारी कमाई ट्रान्सफर कर शिव बाबा को दे देवें।जो बहुत दान करते है तो वो दूसरे जन्म मे बहुत शाहुकार बनते है।ट्रान्सफर करते है ना। अभी तुम 21जन्मों लिये नई दुनियां मे ट्रान्सफर करते हो। तुमको रिटर्न मे 21जन्मो लिये मिलता है। वो तो एक जन्म लिये अल्पकाल लिये ट्रान्सफर करते है। तुम तो ट्रानसफर करते हो 21जन्मों के लिये। बाप तो है ही दाता। यह ड्रामा मे नूंध है। जो जितना करते है वो उतना पाते है। वो इनडायरैक्ट दान करते है तो अल्प काललिये मिलता है। यहां है डायरैक्ट। जिसका रिटर्न तुमको 21जन्मो लिये मिलता है। अभी सबकुछ नई दुनियां मे ट्रानसफर करना है। इनको देखो कितनी बहादुरी की है। तुम कहते हो सब कुछ ईश्वर ने दिया है। अभी बाप कहते है वो सब कुछ हमको दो। हम तुमको विश्व की बादशाही देते है। बाबा ने तो फट से दे दी। किचाया नही। फुल पावर दे देते है।हमको विश्व की बादशाही मिलती है वो नशा चढ़ गया। बच्चों आद का कुछ भी ख्याल नही किया। देने वाला ईश्वर है तो फिर जिम्मेवारी थोडेई रही किसी की भी। अभी देखो सब शाहुकार है।तो तुम्हारा है 21 जन्मों लिये ट्रान्सफर करना। तुम भी जानते हो हम आये है बाप से बादशाही लेने।दिन प्रति दिन समय कम होता जावेगा। आफतें तो ऐसी-2 आवेंगी जो बात मत पूछो। व्यापारियों का तो श्वांस मुठी मे रहते है। कहीं कोई जमघट ना आ जावे। सिपाही का मुंह देखा तो बेहोश हो जाते है। आगे चल कर बहुत तंग करेंगे। सोना आद कुछ भी रखने नही देंगे। बाकी तुम्हारे पास क्या रहेगा। पैसे ही ना रहेंगे जो कि कुछ खरीद कर खा सके। नोट्स आद भी चल नही सकेंगे। राज्य बदल जाता है ना। पिछाड़ी मे बहुत दुःखी होकर मरते है। बहुत दुखों के बाद फिर बहुतसुख होगा। यह है खेल नाहक का खेल। नेचरल कलैमिटीज भी होंगे। इससे पहले बाप से वर्सा तो पूरा लेना चाहिये भल घूमो फिरो। सिर्फ बाप को याद करो तो पावन बन जावेंगे। बाकी आफतें तो बहुत आवेंगी। हाय-2 करते रहेंगे। तुमको तो एक ही शिव बाबा की याद रहनी है। अन्त मे शिव बाबा की याद मे रह कर ही शरीर छोडेंगे। और किसी भी मित्र सम्बन्धी आद की याद नही आवे। अन्त काल बाप को ही याद करना है और नारायण बनना है। यह प्रैक्टिस बहुत करनी पड़े। नही तो बहुत पछताना पड़ेगा।और की याद आई तो नापास हो गये। जो पास होंगे वो ही विजय माला मे पिरोये जावेंगे। अपने से ही पूछना चाहिये हम बाप को कितना याद करते है। कुछ भी हाथ मे होगा तो वे अन्त काल मे याद आ जावेगा। हाथ मे नही होगा तो याद भी नही आवेगा। बाप कहते है हमारे पास कुछ भी नही है। यह हमारी चीज नही है। यह तो खत्म हो जाती है। इसलिये एक बाप को ही याद करते है। अल्फ और बे। बस यही प्रैक्टिस करनी है। गृहस्थ व्यवहार मे तो रहना ही है।कन्यायें तो फिरी है। उनको नौकरी तो करनी नही है। उस नालेज के बदले मे यह लो तो 21जन्मों का वर्सा मिल जावेगा। नही तो स्वर्ग की बादशाही गंवा देंगे।तुम यहां आते ही हो बाप से वर्सा लेने लिये। पावन तो जरूर बनना पड़े। श्रीमत पर चलेंगे तो कृष्ण की गोद मे लेंगे। कहते है ना कृष्ण जैसा पति मिले वा बच्चा मिले। तुमको साक्षात्कार भी होता है बाल लीला आद का।फिर कई उसको जादू समझ लेते है। कोई अच्छी रीती समझ लेते है कोई फिर उल्टा सुल्टा उठाते है। गुड मार्निंग